अपना भारत

देश की आवाज़

'संतोष का वृक्ष कड़वा है, लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है।'
-स्वामी शिवानंद

RNI No. 9966/1966, Postal Reg. No. SSP/LW/NP-543/2017-19

www.newstrack.com | www.apnabharat.org | वर्ष 51 अंक-16 शुक्रवार, 24-30 नवंबर 2017, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, षष्ठी 2074 पृष्ठ-32 मूल्य-5/

नेता मालामाल जनता बेहाल

इसे विरोधाभास कहें या लोकतंत्र का चलन, विकास की गाड़ी सिर्फ हमारे नेताओं को ही आगे खींच पा रही है। हमने यूपी के पांच जिलों आजमगढ़, गोंडा, गाजीपुर, सोनभद्र और कुशीनगर की पड़ताल की तो चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। इन पांचों जिलों में विकास की दौड़ में नेताओं ने इलाके की जनता को बहुत दूर छोड़ दिया है। इन जिलों में से किसी भी नेता की समृद्धि के बराबर कोई भी इलाका या कोई भी शख्स दौड़ नहीं पाया है। दूसरी ओर जनता की समस्याओं को देखें तो उनकी ढेर सारी समस्याएं जस की तस बनी हुई हैं। इन जिलों से जीतने वाले नेता बड़ी-बड़ी कुर्सियों पर बैठे मगर इलाके के विकास व जनसमस्याओं को सुलझाने के प्रति उदासीन ही बने रहे। नतीजतन आम लोग अब भी बेहाल जिंदगी जी रहे हैं।

नीलमणि लाल

लखनऊ। कुशीनगर में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल है। पिछले दस साल से यहां एयरपोर्ट बन रहा है। गेंदा सिंह नाम के एक स्थानीय नामचीन नेता को इस इलाके के गन्ना किसानों की दिक्कतें इस हद तक पता थीं कि लोग उन्हें गन्ना सिंह कह देते थे, लेकिन आज इस पूरे जिले में एक भी चीनी मिल ठीक से नहीं चलती। गन्ना किसान बेहाल हैं। वह कोल्हू पर गन्ना बेचने को मजबूर हैं। उनकी आधी शक्ति 'पर्ची' जुटाने में निकल जाती है। उपज तो बढ़ गयी मगर इलाके में एक भी नयी चीनी मिल नहीं लगी। पुरानी मिलें आधी क्षमता की पेराई कर रही हैं। यहां से कांग्रेस जमाने में आर.पी.एन.सिंह केन्द्र सरकार में मंत्री थे। उनके पिता सी.एस.पी. सिंह भी मंत्री रहे। राजमंगल पांडे प्रदेश से लेकर केंद्र तक मंत्री रहे, पर जिले में एक हाथों को भी उद्योग में काम नहीं मिला। सिर्फ नये मालवीयों ने कुछ स्कूल खोले जहां लोग आधी तनख्वाह पर काम करने को विवश हैं। अब भी इस जिले में चूहे मारकर खाने का चलन दिख जाएगा। भूख से मरने की पहली प्राथमिकी मुलायम राज में इसी जिले में लिखी गयी थी।

आजमगढ़ में सड़कों की हालत खस्ता

अलीगढ़ मुस्लिम यूनीविर्सिटी में मुस्लिम शब्द जोड़े जाने से नाराज शिब्ली नोमानी ने आजमगढ़ को शिक्षा के केंद्र के रूप में चुना था। यहां के लोग धारा से विपरीत चुनावी नतीजे देते रहे हैं। वैसे यह जिला समाजवादियों का पुराना गढ़ रहा है। चरण सिंह कहा करते कि उनकी दो आंखें हैं-एक बागपत और दूसरी आजमगढ़। एक दौर में उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा सांसद और विधायक आजमगढ़ के ही थे। यह समाजवादी सरकार का दौर था।

मुलायम सिंह को भी आजमगढ़ सुरक्षित पनाह लगता है तभी तो अपनी तीसरी पीढ़ी को राजनीति में जगह देने के लिए उन्होंने मैनपुरी को खाली करते ही अपने लिए आजमगढ़ को चुना। चन्द्रजीत यादव इंदिरा युग में यहां के नामचीन नेता थे। आज भी आजमगढ़ को बनारस और गोरखपुर से जोड़ने वाली सड़क प्रदेश की सबसे खराब सड़क है। इन दोनों सड़कों पर चलने वाले लोग सरकार व प्रशासन को कोसते रहते हैं। इकलौती चीनी मिली किसी तरह सरकारी बैसाखी पर चलायी जाती है। पूर्वांचल विश्वविद्यालय आजमगढ़ की जगह जौनपुर कर दिया गया। मुलायम के बेटे अखिलेश के पांच साल और मुलायम सिंह यादव के तीन बार के कार्यकाल के बावजूद आजमगढ़ विकास के पैमाने पर बहुत ही पीछे है।

ये जिले बन गए पिछड़ेपन की मिसाल
देखें पेज 3 पर

कांटे के मुकाबले में बीजेपी आगे

उत्तर प्रदेश के स्थानीय निकाय चुनावों में अभी तक के अनुमान बता रहे हैं कि सोलह नगर पालिकाओं में कम से कम 10 जगह बीजेपी आगे दिख रही है। बाकी 6 नगर निकायों में बाकी दलों की बढ़त का संकेत है।

02

नियमों में उलझती धान की खरीद

छत्तीसगढ़ में धान की खरीद शुरू हो चुकी है, लेकिन किसानों को सबसे बड़ी दिक्कत नए-नए नियमों को लेकर हो रही है। खाद्य विभाग ने पहले आदेश जारी किया था कि किसान तीन से चार किस्तों में धान बेच सकते हैं।

08

स्वास्थ्य विभाग का सिस्टम फेल

बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर में बच्चों की मौत के आंकड़े भी सार्वजनिक करने पर रोक लगा दी गई है। दूसरी तरफ इससे जुड़े अन्य जिलों में भी हालत बहुत ख़राब है।

16-17

newstrack Just Journalism

www.newstrack.com
just journalism !!

@apnabharatnews पर देखें खबरें